# उपदेश कथा।

और

# इंग्लण्डको उपाख्यानका चुम्बक।

स्टुयार्ट साहेबने किया ऊया।

STEWART'S

# HISTORICAL ANECDOTES,

WITH

A SKETCH OF THE HISTORY OF ENGLAND,

AND

Her Connection With India.

TRANSLATED BY REV. W. T. ADAM.

**Hinduwee.**

Calcutta:

PRINTED AT THE MEDICAL PRESS, No 46 TOLTOLLAH, FOR THE CALCUTTA SCHOOL BOOK SOCIETY, AND SOLD AT ITS DEPOSITORY, CIRCULAR ROAD.

1st. Ed. 500. ; Nov. 1837. 2nd. Ed. 1500.

## समाचार।

इस् किताबमें अलग २ दो भाग पाये जाते हैं; पहिला भाग ग्रेच् साहेबका इतिहास छटा नाम करके एक ग्रन्थ, और परस्पर ग्रन्थोंसे कितना एक स्थूलार्थ संग्रह करके इस् देशके अनुसार कुछ एक सजायके तर्जुमा किया गया है। दूसरे भागमें दो प्रकरण; एक इङ्लण्ड देशीयोंकी अज्ञानता और अधर्म्माचरणके विलास पूर्व्वक ज्ञानवान् पश्चिम देशीयोंमें मान्य होनेका संक्षेपसे वर्णन; दूसरा इस् देशमें साहेब लोगोंके पहिले आवनेका कुछ वर्णन।

## सूची पत्र।

# उपदेश कथा।

## सदुपदेश।

किसीने एक बुद्धिमान्से प्रश्न किया, कि बालकनको क्या २ सिखावना उचित है? तिस्में इसने उत्तर दिया, कि मनुष्य भाव होनेके समयमें जो चाहिये, सोइ बालकनको सिखावना योग्य है; और एक पण्डितनेभी यह कहा है, कि बालक को जिस् मार्गमें चलाना उचित है सो सिखाओ, क्योंकि वह वृद्ध होकेभी उस् मार्गको त्याग नहीं करैगा।

## दयाप्रकाश।

किसी समय एक मनुष्य यिरूशालम नगरसे यरूख् नगर को जाते २ चोरोंको बीचमें पड़ा, और उन्होने बड़ी मार मारके उस्को अधमुआ करके उस्के वस्त्रादिक लूटकर चले गये। तिस्के पीछे एक याजक उस् मार्गसे आया, और अधमरे पथिकको देखके दूसरी ओरसे चला गया। क्षणभर पीछे और दूसरा जनाभी इसी प्रकारसे उसको देखके दूसरी ओरसे चला गया। परन्तु एक बड़े दयालु पुरुष पराये दुःखमें दुःखी उसी मार्गसे जाते २ इसी मृततुल्यको

दुर्दशाको देखके हौले२ उसके समीप गये, और बज़त् अन्तःकरणमें खेद पायकर कहने लगे, कि हाय किस् हत्यारेने इसको ऐसी मार मारी है, हाय सब शरीरसे लोहू निकलता है। तब उसको उठायके जहां२ घाव था वहां२ औषध लगादिइ, और अपने पशुपरबै ठायके उसे सराय-में लाये, और उसकी बड़ी सेवा करने लगे, दूसरे दिन सोइ सज्जन पुरुष पराये दुःखमें दुःखी वा दयावान् भठि-यारेको दो चौअन्नी देके कहने लगे, कि इसकी भली प्रकार से सेवा करो, यह किसी प्रकारसे दुःख न पावे; और इसके लिये जो अधिक खरच होय सोभी करो, और जब हम् फेर आवेंगे तब सो तुझे भर देंगे।

इसीलिये तुमभी इसी दृष्टान्तसे पराये ऊपर दया करके पराये दुःखमें दुःख जानो।

---

## पुण्यका फल।

कोई समय एक राजाने अपने सेवकको बुलाया, और उससे उत्तर नहीं पायके अपने घरका द्वार खोला, और देखा कि एक बालक अपना सेवक सो बड़ी नींदमें सूता है। और उसीको जगावनेके लिये उसके समीप आयके देखा, कि बालककी जेबसे एक चिट्ठी जिस् पर कुछ लिखा है,

और उसका कुछ बाहिर होके रहा है। तब चिट्ठीमें क्या लिखा है, यह जाननेके लिये राजाको इच्छा भई। इस कारण उसको निकालके पढ़ने लगे, तब समझा कि पत्र बालककी माताने बालकको भेजा है, तिसका अर्थ यही, हे मेरे प्यारे बेटे, तुमने मेरा दुःख दूरकरनेको लिये अपनी कमाइका कुछ भेजनेसे अपने पर दुःख लिया है। यह तुम्हारी दया मैंने मानी, और भी तुम्को मा बाप पर बड़ा स्नेह है इसमें मैंने जाना; इसका फल परमेश्वर तुझको अवश्य देंगे। राजा इस पत्रको पढ़के घरमें फेर गया, और कै एक मोहर पत्रमें लपेटके उसीको बालककी जेबमें फेर रख दिया। पीछे ऐसे ऊंचे करके पुकारा, कि बालककी नींद खुल गई। राजाने कहा, क्या तुझको बड़ी निद्रा भई थी? तिसमें बालक उत्तर क्या देगा, सो विचारके ठहराने सका नहीं। तब अपनी जेबमें हाथ देके खोलके देखा, कि उसी चिट्ठीके सङ्गमें कितनी एक मोहरे हैं। यह देखके बालकको बड़ा आश्चर्य भया, और बहुत भावना करके इन् मोहरन् समेत राजाके चरणपर गिरके बहुत रोने लगा। राजाने पूछा तुम् क्यों रोते हो? तिसमें बालक व्याकुल होके राजासे कहने लगा, कि हे महाराज किसने हमारे सर्व्वनाशकी इच्छा किई है, मैं इन् मोहरन्के विषय

मैं कुछ नहीं जानता हूं। राजाने उसको अभय दान देके कहा, कि हे सुशील बालक तुम्हारी सुकृतिके फल देनेके कारण परमेश्वरने तुमको येमोहरैं दिई हैं। तुम अपनी माताके पास इनको भेज दो, और उसको जनाओ कि मैं अपने पर तुम्हारा और तुम्हारी माता बोझ लेऊंगा।
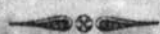
## माता पिताके ऊपर भक्ति।

जिस २ विषयमें तुमसबको माता पिताकी आज्ञा है, सो ईश्वरकी आज्ञासे जो उलटी न होय, तो उस आज्ञाका यत्नसे निर्वाह करो, और सत् सङ्गमें बसके और उनके अच्छे व्यवहार सीखके माता पिताकी भक्ति करना।

माता पितामें श्रद्धा भक्ति करना मनुष्यको उचित है; क्योंकि माता पिताको सन्तानकी चाहना करनेका प्रयोजन यही, कि पुत्र जन्मके ज्ञानवान् होके, सबके पास मान्य होय; तिस करके हमभी मान्य होवेंगे, और पुत्रकी श्रद्धा भक्तिसे सब सन्तुष्ट रहेंगे। जो पुत्र माता पिताकी भक्ति नहीं करे सो पुत्र केवल माता पिताको दुःख देनेके लिये जन्मे है। पुत्र जो जनमके मर जाय सो अति श्रेष्ठ, वा नहीं जन्मे सोभी भला, जिसलिये सो एक बेर शोक देता है; परन्तु मूर्ख पुत्र कुछ नहीं; जिसके लिये उससे

माता पिता सदाही दुःख पावते हैं, इसके लिये मुझको यही करना उचित है, कि योग्य कालमें विद्याका अभ्यास और माता पिताकी भक्ति करें।

किसी समयमें एक घरमें आग लगके चारो ओर चिंगारियांने उड़ने पड़ने लगी, इस विपत्तिके समयमें सभी व्याकुल होके अपनी२ वस्तु, बचानेके लिये बाहिर करते हैं। परन्तु दो भाइ उनके माता पिता बहुत वृद्ध और दुर्बल, और भागके अपनेको बचावने नहीं सके केवल घरमें भयके मारे कांपने लगे। तब उन्होने विचारा, कि जिन्होनें हमको जन्माया है, और जिनसे इस पृथ्वी मण्डलको देखा, ऐसी सबसे उत्तम वस्तु जो माता पिता, चलो सब धन छोड़के, उन्होकी रक्षा करें। तब एकने पिताको और एकने माताको कन्धे करके, इस अग्नि समूहसे दूर जायके, और किसी बचावके स्थानमें ले जायके, इस प्रकारसे उन्हीकी रक्षा किई। परन्तु अपना जो सब धन जलगया, जिसके विषयमें एक बेरभी उन्होने कुछ नहीं बिचारा। यह कैसा सुधर्म। इस लिये यही मनुष्योंको कर्त्तव्य है, कि सभी विषयमें सबके आगे माता पिताका यत्न करें, और सब पीछे।

## यौवन कालमें विद्या उपार्जनकी कथा।

आगे सिसेरो नाम करके एक मनुष्य सद्विवेचक और बड़ा ज्ञानवान् वा सत्यवादी था। उसने आपही से चेष्टा करके, भली प्रकारसे ज्ञानका स्वरूप समझा, और उसका विचार सब स्थानमें मान्य भया। और उसने ज्ञानके विषयमें यहीबात कही, कि ईश्वरकी ओर मार्ग दिखावनेको और मनुष्योंको काम दिखावनेको ज्ञानके विना क्या है? अर्थात् ज्ञान नहीं होनेसे कुछ नहीं होता; इसके निमित्त ज्ञान सबसे बहुत् उत्तम है। और जो तिसका यत्नसे उपार्जन नहीं करता, परन्तु प्रतिदिन आलसी रहता है, सो सुखी किस प्रकारसे होगा। यह हम नहीं जानते, जैसे सर्प जाति होके निर्विष होनेसे, उससे कोइ नहीं डरता, तैसे ज्ञान शून्य आलसी जो लोग सो किसी कामका नहीं; और सत् सभामेंभी शोभाको नहीं पावता, सो आपही कुसङ्गमें फिरके कुकर्ममेंही मग्न होता है, तिसलिये उसको सभी कोइ अपमान करते हैं।

ज्ञानवान् और पुण्यशील लोगको देखो, कि सबको सुख और उत्तम विद्या देनेके कारण अपनी शक्तिके अनुसार चेष्टा करता है; इसीलिये सोई उपकारी मनुष्य और मनुष्यों का अलङ्कार है।

## सतकर्म्मे काल काटना।

जो कोई निद्रामें अथवा आलस्में अथवा बिना प्रयोजन फिरनेमें अथवा जूवा खेलनेमें अपना काल काटे, उस्की बुद्धि और अन्तःकरण बक़त् बुरा जाना जाय। जो इस् प्रकारसे काल व्यतीत किया जाय, तब ईश्वर जो उत्तम कर्म्म करनेके लिये हम् सबको समय दिये हैं, सो केवल व्यर्थ होय; और हम्सबको यह् सब बुरे कर्म कुमार्गमें ले जांयगे। जो मनुष्य सदा आलस्य करके कई काम नहीं करता, सो थोड़े दिनमें कुकर्ममें प्रवृत्त होय, इसी लिये तुम् सब समयके अनुसार निकम्मे नहीं रहके, यत्नसे निर्दोष कर्म्म करो। और सत् कर्म्ममें काल व्यतीत करनेको मन वाणी कायासे चेष्टा पाओ; और भली क्रियामें काल काटनेसे तुम् सबका मङ्गल होने सकैगा। इसीलिये अपनी शक्तिके अनुसार ईश्वरके गुणानुवादमें, और उसके भजन, और पराये उपकार करनेमें सदा मन लगाओ; ऐसा काम करना हम्को और सबकोभी अवश्य कर्त्तव्य है, और केवल तिसका आचरण करनेको सब समय ईश्वरने हमें दिया है।

रूम देशमें तीतस वेसपाजीयन नाम करके एक राजा था, उसके जीवने पर्य्यन्त यही रीति थी, कि वह् प्रतिदिन कर्म दिनमें करके रात्रिमें उस्का विचार करता, और जो कधी

किसीदिनमें पराया उपकार नहीं होता, तब नित्यदिन गिननेकी पुस्तकमें इसीप्रकार लिखता, कि हमारा एक दिन वृथा गया।

आलफ्रेड नामा बड़ा एक राजा था, जो अपने ज्ञान और पुण्य और उपकारके कारण बहुत प्रसिद्ध था। सो इस समयके लोगोंको दृष्टान्तका ठिकाना भया है। उसने जीवनेके समयमें एक२ काम एक२ घड़ीमें ठीक किया था। और इङ्गलण्डके चौबीस घण्टा दिन रातका तीन भाग करके कर्त्तव्य सभी कर्मका इसी प्रकारसे निश्चय किया था। और वह बहुत रोग करके दुःख पावता, तौभी आहार, निद्रा, विहारके लिये आठ घण्टा रखके और सोलह घण्टेके आठ घण्टेमें लिखना पढ़ना और ईश्वरका भजन करता। और दूसरे आठ घण्टेमें राजका कर्म करता। वह जानता था कि काल काटनेके प्रकारका लेखा ईश्वरके आगे देने पड़ेगा।

## मित्रताईकी कथा।

परस्पर सम्मान और स्नेह करके दो मनुष्योंके मनका जो मिलना, उसी मिलनेसे आपसमें जो सम्बन्ध उत्पन्न होय; उसीको मित्रताई कहते हैं। जो मनुष्य विना अपने मतके औरका मत नहीं सुनता, सो कार्य्यके निर्वाह करनेके कारण

दूसरेको योग्य परामर्श नहीं दे सकता। और जो मनुष्य सबके ऊपर सन्देह करे, उस् मनुष्यका और किसीपर विश्वास नहीं होता।

एक राजा सिराकूस् देशमें दिओनिसिअस् नाम करके था, वह् सदा कुकर्म्म करता था। एक दिन इस् राजाने दामन नामा एक मनुष्यका गल देनेके योग्य अपराध बूझके उस्को कहा, कि तुम्हारे अपराधके लिये तुम्को गल देने होगा। यही बात दामन सुन्के अपनी स्त्री पुत्रादिको देखनेके लिये इस् राजासे कहने लगा, कि हम्को स्त्री पुत्रादिके देखनेकी बड़ी इच्छा ऊई है, जो तुम् हमारा प्राणदण्ड करो तब उन्सब-को और कधी हम् नहीं देखेंगे। इसीके कारण हे राजन् थोड़े समयके लिये मुझ्को घरमें जाने दो। तब राजाने कहा, कि तुम् जो जायके प्राणके भयमें नहीं आओ, तुम्हारे पर किस् प्रकारसे हम् विश्वास लाय सकें? दामनने उत्तर दिया, जो मेरे आवनेमें तुम्को विश्वास नहीं होय; तब हमारे दण्डकेलिये हमारे मित्र पिथिअस्को बन्धक रखो। ऐसा ठीक होनेके पीछे सो राजासे आज्ञा लेके अपने घरको चला गया।

पश्चात् उस्के फिर आवनेके आगे राजा उस्के मित्र पिथिअस्के देखनेके कारण बन्दिगृहमें गया; और उस्को कहा, कि तुम्ने दामनकी बातमें विश्वास करके बड़ी मूर्ख-

लाईका काम किया है; तुमने कैसे बूझा, कि वह तेरे लिये वा और के लिये अपने प्राणको देगा? पिथिअस् यह बात सुनके निडर होके, राजासे कहने लगा, हे महाराज, हमारे मित्रकी बड़ाईकी किसी प्रकार न्यूनता होनेसे मैं सौ२ बार मरने चाहता हूं; वह आवनेको कहके गया है, उसकी बात कभी उलटी नहीं होगी, यह हमको निश्चय ज्ञान है; और उसके रहनेसे मुझको प्राण दण्ड नहीं होगा, मैं यह निश्चय जानता हूं, परन्तु ईश्वरकी प्रार्थना करता हूं, कि वह मेरे मित्रको बचाय रखे। और जबलों मैं जीऊं, तबलों सो जिस् प्रकारसे आवने नहीं सके, ऐसी अटक उपस्थित करो। क्योंकि नियमके दिन वह इहां अवश्य आवेगा, और मरेगा, तब उसके स्त्री पुत्र बड़ा दुःख पावेंगे। इसी लिये मैं मरूंगा, तिसमें हानि नहीं होगी, परन्तु वह जीवता रहेगा, और अब हमारी मृत्यु होनी भली है। राजा यही सब बातें सुनके, आश्चर्य होके कुछ बोला नहीं। जब नियमका दिन गल देनेके लिये आया, तब पिथिअसको बन्दि गृहसे बाहिर करके लाया, तब पिथिअस् आनन्दसे गल देनेके मंचपर चढ़के हाथ हलाय करके देखने हारोंसे कहने लगा, मैंने पहिले जो प्रार्थना कियी थी, सो मैंने समझा कि ईश्वरने कृपा करके मेरी प्रार्थना सुनीहै। क्योंकि डामनके आवनेकी

कोई अटक ऊई है, मैं जानता हूं ईश्वरने उस्को अटकाव दिया है। इस् अटकावको दूर करके आवनेको उस्की सामर्थ नहीं है, जो मेरे मरनेके अनन्तर वह् आवेगा, तो जीवने पावेगा, यहो बऊत् अच्छा है, और यही मेरीभी इच्छा सची है। परन्तु यह् बात पिथिअस्के कहने पीछे एक रोला भया, और सब लोग यही कहने लगे, कि रोको इस्का गला देना मने करो। तब दामन बड़े वेगसे आयके और घोड़ेसे उतरके और गला देनेके मंचपर शीघ्र चढ़के और पिथिअस्को गोदी करके कहने लगा, हे मित्र ईश्वरकी बड़ी स्तुति होय, कि उस्ने तुमको इस् सब आपदसे बचाया। पिथिअस् दामनको गोदी करके खेदित होके कहने लगा, हे मित्र तुम् क्यों आये हो? इस्में तुम्हारा सत्य नाश होगा, और यहो मुझ्को कितना दुःख है कि तुम्हारा प्राण रक्षा करने के कारण अपना प्राण नहीं दे सका। ये सब बाते दिओनिसिअस् सुनके आश्चर्य युक्त भया, और उस्के मनके नेत्र खुले अर्थात् ज्ञान भया, और अन्तःकरणमें दया भई। तब वह् सिंहासनसे नीचे उतरके गला देनेके मंचके समीप जायके कहने लगा, कि जैसी तुम दोनोकी मित्रताई, मैं ने कभी ऐसी नहीं देखी। तुम जीवते रहो, यह धर्म है, और धर्मका दान करनेहारा ईश्वर है, इस्को तुमने प्रमाण किया है, और

सुयशको होके जीओ और नीति शास्त्रके उपदेशसे तुम्हारी उत्तम मित्रताईका भाग हमको दो।

## मिथ्या कहना।

मिथ्या वाक्य कहना ईश्वरका अविश्वास और अनादर करना है; क्योंकि मिथ्यावादी लोग ईश्वरकी आज्ञाको भङ्ग करते हैं। और जो सत्यवादी है, उन्से ईश्वर प्रसन्न है, क्योंकि वे उस्की आज्ञाको मानते हैं। मिथ्या और प्रतारणा इन्से परे और अधर्म नहीं है। मिथ्या कहना ऐसा निन्दित है, कि सब मिथ्यावादी दूसरेको मिथ्या कहते सुनके निन्दा करते हैं। देखो जो सब मिथ्या कहते हैं, उन्का दो प्रकारका अभाग है, एक यही कि जो मिथ्यावादी कदाचित् सत्य कहे, तौभी कोई विश्वास नहीं करे; दूसरा यही कि एक बेर मिथ्या बात कहके उस्को ठहरानेके लिये अनेक मिथ्या बात कहना उन्को अवश्य है, इस्के परे और क्या प्रतारणा है।

एकने कहा है, कि मैं अपने सात एक वरस्के वयसमें होके और अपनेसे वयसमें बड़े दो जनोंके साथ इकट्ठा पाठशालामें पढ़ता था; एक दिन मैं पाठशालामें नहीं गया था, केवल इसीलिये, इन् दोनो जनोने मेरा बहुत तिरस्कार किया था; परन्तु मिथ्या बात अथवा और कोई दोष करके कोई मुझको

उलाहना कभी नहीं देवे सका। मिथ्या बातें ऊपरके मेरा स्वभावसे देखहै। और जो कभी मैं कोई अपराध करता, और जो कोई पूछता कि इसके कारण तुमको दण्ड पावना योग्य है तब हम् इसको नहीं मुकरेंगे; परन्तु इसको अङ्गीकार करके दण्ड भोग करेंगे, मेरा मन मिथ्या कहके मलीनताको नहीं जन्मावता। देखो यही मत् आश्रय करनेसे अब पर्य्यन्त अन्यथा नहीं करता।

आरिस्तातल नाम करके एक मनुष्य परम ज्ञानवान् था, उस्से एक जनेने प्रश्न किया, कि मिथ्या कहनेका क्या फल है? तिसमें उसने उत्तर दिया, कि मिथ्या कहनेका यही फल है, कि सत्य कहनेसेभी विश्वास कोई नहीं करता। आपोलोनिअस् नाम करके और एक मनुष्य ज्ञानवान् कहताहै, कि जो सब लोग मिथ्या कहके अपराधी होते हैं, वे सब उत्तम लोगोंके बीचमें नहीं गिने जाते। और जो सब दासका कर्म अपना प्राण बचावनेके लिये करते हैं, वेतिन मध्यमेंभी मिथ्यावादीकी निन्दा होतीहै।

मेखाग्रलस् नाम करके एक बालकका स्वभाव बहुत भला था, और उत्तम वंशमें जन्मा था; परन्तु सदा बुरे लोगनके सङ्गमें बसनेसे उसको मिथ्या कहनेका अभ्यास अत्यन्त हुआ था; इसीसे उसको कोई आत्मिक लोग विश्वास नहीं करके

मिथ्यावादी जानके निन्दा करते थे। सत्य नहीं कहके उसको पापका भोग इसी प्रकारसे प्रति दिन करने पड़ता था।

इस् मेखाकलस्का एक अपूर्व बाग नाना भांतके फूल और फलसे परिपूर्ण था, उसीकी सुन्दरताईमें मेखाकलस् सदा मग्न रहता था। एक दिन प्रारब्धसे एक गायने बाड़ तोड़के और बागमें घुस्के पांच वृक्षनको नष्ट किया। मेखाकलस् इस् घुसनेहारी गायको आप नहीं हंकायके मालीके पास दौड़ा और पुकारने लगा, कि ओ माली, एक गाय हमारे बागके वृक्षन्को नष्ट करती है; इस् लिये अभी तुम् आवो, और उसको हम् दोनो हंकाय दे। मालीने कहा, कि मैं पागल नहीं हूं, अर्थात् मेखाकलस्की बातमें उस्ने विश्वास नहीं किया।

एक दिन मेखाकलस्ने पिताको घोड़ेने गिराय दिया, और उसकी जंघा टूट गई, तब मेखाकलस्ने अपने पिताको पृथिवी पर गिर पड़ा और अचेतन होके रहा देखके मनमें अत्यन्त व्याकुल हुवा, और आप कुछ सहायता नहीं कर सक्के और किसी लोगके पास जायके अपने पिताकी विपत्तिका समाचार कहने लगा, और उसकी सहायताके लिये उनके आवनेके कारण विनती करने लगा, परन्तु मेखाकलस्को वे सभी अत्यन्त मिथ्यावादी जानते हैं इससे उसकी बातमें

कोईने विश्वास नहीं किया। तब मेखाकलस् कोई सहायता नहीं पायके वङत् दुःखी होके रोवता२ फिर गया, और उस् स्थानमें आयके देखे कि अपना पिता नहीं है, इसके उपरान्त उस्ने सुना कि कोई एक मनुष्यने आयके और उस्के पिताको घरमें ले जायके घावमें पट्टी बांधता है; तब वह निश्चिन्त भया।

मेखाकलस्ने एक दुष्ट बालकको कलङ्क देनेके लिये झूंठके कुछ कहा था; इसके कारण उस्ने मेखाकलस्को मार्गमें घाट लगायके बड़ी निठुराईसे मारा।

उस्को मेखाकलस्ने कुछ दिन सहा, परन्तु जब नहीं सहने सका तब अपने पिताके समीप जायके इस् दुष्ट बालककी सब दुष्टताईकोने कहने लगा। मेखाकलस्का बाप उस्की बात में भली प्रकारसे विश्वास नहीं कर सका, तौभी अपने पुत्रके स्नेहके कारण उस् दुष्ट बालकके माता पिताके समीप जायके सब वृत्तान्त कहा; परन्तु उस्ने उस्में विश्वास नहीं किया। और निदान ऐसा कठोर उत्तर दिया, कि तुम्हारा बेटा मेखाकलस् अत्यन्त मिथ्यावादी है, और उस्की बातमें हम् किसी प्रकारसे विश्वास नहीं करते, इसी प्रकारसे उत्तरोत्तर भाग्यहीन मेखाकलस्ने मिथ्या कहनेके बुरे अभ्यासके कारण अपने ऊपर अनेक आपद उठाईं; तब मेखाकलस् ऐसी चिन्ता

करने लगा; कि हाय, मैंने इतनी अनर्थ मिथ्या क्यों कही, और अपने पर मैंने आपद क्यों उठाई? और यह दुष्ट स्वभावही मेरे सङ्ग और क्यों रहेगा? इस् लिये मैं इस् दोष-से किस् प्रकारसे उद्धार पाने सकूं? पीछे यह विचार करके समझा, कि मिथ्या बात अधिक बात कहनेसेही बाहिर होती है, इसलिये पीछे थोड़ी बात बोलने लगा, और उसने अपनी चालका पश्चात्ताप करके समझा, कि मिथ्या कहनेसे सत्य बात कहना बऊत सुगम है। और उसके मनमें थोड़ेर सत्य प्रबल भया, और उसका प्रेम सत्यसें इतना ऊवा, कि फांसीके कारणभी वह उसको छोड़नेको कचियाय गया। सत्यके इस् आदरके कारण सब मित्रोंसे मेखाकलसने सुख्याति पाई, और उसमें सभी भरोसा करने लगे।

## कृतघ्नताई।

हित करनेसे उलटा करे, अर्थात् जो भला करे, उसका जो बुरा करे, और जो प्यार करे, उसको द्वेष और निन्दा करे, उसीको कृतघ्न कहा जाय। वह् सब मनुष्यन्से अत्यन्त अधम और पापात्मा है। जो मनुष्य अपने उपकारीकी ओर बुराई करता है, सो मनुष्यन्में नहीं गिना जाता है। जो कोई मित्रताईके तत्वको भङ्ग करता है, उसमें कोई मनुष्य

भरोसा नहीं करेगा, औरभी दयावन्त लोग कृतघ्न लोगके चरित्रको देखके दूसरे पर भलाई करनेको उनका आनन्द नहीं होता है।

मासिदन देशका फिलिप नाम करके एक राजा था। उसने अपने एक सभासदको कुछ कार्य्य करनेके कारण समुद्रके मार्गसे परदेशको भेजा, और मार्गमें अचानक् बड़ी आंधी आयके नाव मारा गई, और वह समुद्रमें डूबने लगा। और एक बड़ा दयावान् मनुष्य उस समुद्रके तीरमें बसता था, उसने सब विपद्को देखके और निपट दुःखी होके शीघ्र अपनी एक नावमें उसको चढ़ाया, और निकालके अपने घरमें लाया, और उसको मिलनसारीसे खाने पीनेको देके और बिदा करनेके समय जो कुछ अवश्य मार्गका खरच देके उसने बिदा किया। उसने इसप्रकारसे रक्षा पायके अपने देशमें पहुंचके राजाके समीप सब आपदका समाचार कहा, परन्तु पुण्यवान्के अनुग्रहके विषयमें जिसने अपने प्राणकी रक्षा दिई थी, उसने कुछ नहीं कहा। इस कथाको सुनके राजाको दया हुई, और उसको भलामनुष्य जानके कहने लगा, कि जो दुःख तूने हमारे काम निर्बाहनेके लिये पाया है, उसको हम् कभी नहीं भूलेंगे। यह सुनके उसने मनमें विचारा, कि राजासे जो कुछ मैं इस भले समयमें चाहूंगा,

कोई पाऊंगा; यह मनमें निश्चय करके रक्षा करनेहारा पुण्यवान् मनुष्य जिस्स्थानमें बसता है, उसीको लेनेकी इच्छा करके वह कहने लगा, कि हे महाराज, आपके राज्यके बीचमें कुछ पृथ्वी समुद्रके तीरमें है, सो मुझको जो अनुग्रह करके दो, तब महाराजका अनुग्रह मेरे पर दीख पड़े, और मेरी आपद्की वह चिन्हानी रहैगी। यह् सुनके उसी समय राजाने पृथ्वी उस्को दिई। तब यह् सभासद तुरन्त बिदा होके, और इस् पृथिवीको अधिकार करकै, दयावान्को निकाल दिया। जिस्ने अपने प्राणकी रक्षा किई थी, यह निरपराधी साधु मनुष्य इसी प्रकारसे अपमानको पायके राजाके पास आयके कहने लगा, कि हे महाराज, आपके जिस् सभासदको मैंने समुद्रके जलमें डूबते जहाजसे बचाया था, वही महाराजकी आज्ञाके अनुसार उसी समुद्रके तीरका अधिकारी होके यही देखो मुझको उस् स्थानसे दूर कर दिया है। यह बात राजा सुनके बड़त् क्रोध युक्त होके उसी सभासद्को बांधके लावनेके आवनेको आज्ञा दिई। तब राजदूतने जायके उस्को बांधके लायके राजाके निकट खड़ा किया, तब राजाने यही आज्ञा दिई कि इस् दुरात्माके कपालमें ये अक्षर खुदवाय दो, कि यह मनुष्य उपकार करनेहारेका बुरा करनेहारा, और मूर्ख और नराधम है।

इस् प्रकारसे तब उस्को निकाल देके पुण्यात्मा मनुष्यको जैसे पृथिवीमें पहिले अधिकार था, तैसेही फेर दिया।

## उद्यम।

जो कोई मनुष्य उद्योग करता है, सो धनी होता है, और जो कोई मनुष्य अपनी सन्तानोंको उद्योग करनेको सिखावे, वह सबसे भला है। जिस्को आलसी असाध्य विचारता है, सो उद्योगसे करने सकता है।

हेरिस नाम करके एक मह्या कवि यह कथाकहता है, कि एक पथिकने एक नदीके तीरमें आयके मनमें विचारा, कि नदीकी धारा वेगसे बही जाती है, और सब जल जब बह जायगा, तब मैं नदीके पार जाऊंगा; इस् अनहोनी आशा-में अटक रहा, और पार नहीं गया। परन्तु किसी समयमें पर्वतके भरनेसे जलकी धारा इस् नदीमें मिलीथी, तिससे धारा कम नहीं होके निदान क्रमसे जलकी बाढ होनेसे प्रबल होने लगी।

जो बालक ऐसे अपने विद्या सीखनेके समयमें कहता है, कि जब बूढा हूंगा, तब सीखूंगा। वह् अज्ञानतासे शिक्षाका अपमान करता है, और इस् प्रकारसे अपना खेलके दिन गंवावता है, और वह् जिस् समयमें सहजसे विद्या उपार्जन

होय, तिसको लांघके और विलम्ब होनेसे वह दुर्लभ है, वह उसीको सुलभ पावता है, परन्तु यह उसके मूर्ख होनेका लक्षण है।

## न्यायका विषय।

मनुष्यका स्वभावसे साधारण धर्म यही है, कि सब प्रकारसे सत्यवादी होना इसके लिये जो कोई अपनी सामर्थ्यके अनुसार सत्यवादी है, वह प्रतिष्ठाको पावता है। और देखो कि सचाई और खराई सब न्यायका मूल है।

थेमिस्तोक्लिसने एक वेर अपने देशके लोगोंकी सभामें कहा, कि एक मैंने उपाय ठीक किया होगा, परन्तु उसने कहा कि मण्डलीमें कहनेका काम नहीं हैं, उसको केवल एक मनुष्यसे कहूंगा। इसके लिये तुम सब अपने मनके सरीखा एक मनुष्य ठहराओ, कि उससे मैं उसको कहूं, और उससे वह निबहने सके। यह सुनके जिसके परामर्शविना कोई कुछ कर्म नहीं करता, और यथार्थवादी वा विश्वासका पात्र ऐसा जो अरिस्तिदिस उसीको परामर्शके कारण सभोंने ठहराया, तब उसको थेमिस्तोक्लिस निर्जन स्थानमें लेजायके उससे यह कहने लगा, कि नदीके तीरमें ग्रीकके लोगोंकी वहर लगी है; जो उसको मारें तब सहजमें

बऊत सम्पत् पाई जाय। यह सुनके अरिस्तिदिस फेर सभामें आयके थेमिस्तोक्लिसको कहने लगा, कि तुम इस अयथार्थ उपायसे रहित हो। इसका फल यही है, कि बऊत धनके लाभकी इच्छासे यथार्थकी हानि नहीं किई। परन्तु उसको ठहराया।

मासिदन देशका राजा जो फिलिप, उसके सेवकोंमें एक सेवकने अपराध किया था, और उसकी परीक्षाके समयमें सब लोगनने राजासे कहा, कि हे महाराज प्रसन्न होके जिनके पास न्याय करनेको भार दिये हैं, उनसबको अपने सेवक लोगके ऊपर दया करनेके आज्ञा दीजिये, नहीं तो तीनकी सुख्याति किसी प्रकारसे रक्षा नहीं पावेगी। राजाने कहा, यह सत्य है सही, परन्तु अन्यायसे अपनी सुख्यातिका नाश करनेसे उनका अपमान होना अच्छा है।

## सद्गुणकी कथा।

सद्गुणके द्वारा सौभाग्य और यशका लाभ है। मनुष्यमें महत् होनेका सद्गुण लक्षण है। जो मनुष्य अपने साथीमें सद्गुणको नहीं चाहता, तब उसमें सद्गुणका लेशभी नहीं है। सद्गुण युवा मनुष्यका अपूर्व्व भूषण है, और कङ्गाल मनुष्यका सहाय है, और दुःखित लोगके चैनका उपाय है।

और जो सेवक अपने जीवनेके कारण सेवकाई करता है, वह उसके द्वारा सम्पत्तिको पावता है। वह, बड़ेसे बड़े राजाके तेजका मुकुट है। सद्गुणी लोक दुःख पावनेसेभी अन्तमें अच्छा होनेकी आशा करने सके। सद्गुणका उलटा करनेसे सद्गुणी लोकने दुःख पावनाभी भला है।

एक व्यापारी बऊत् भला और प्रतिष्ठित था, जिस्के अभाग्यसे समयके अनुसार व्यापारके काममें सब सम्पत्का टोटा होनेसे दरिद्री होके बड़ी आपदमें पड़ा, और बड़ा दुःखी होके कि कोई मेरी सहायता करे, इसी आशासे उस्ने किसी नगरमें प्रवेश किया। पहिलेसे जिन् लोगनके सङ्ग व्यवहार था, उनके साथ भेट करके अपने दुःखका समाचार देके जिस्में फेर व्यापार करने सके, ऐसी सहायता उन्के निकट प्रार्थना किई। और जिन्के ऋणका शोध करने नहीं सका था, उन्के विश्वासके कारण कहा, कि तुम्हारा जो मैं धरावता हूं, सो सब शोध करूंगा। यह मेरी इच्छा है, और जो ईश्वरकी इच्छा होय कि उसका मुझ्को सिद्धि होय, तब मैं आनन्दित हूंगा। यही सब खेदकी बातें सुनके सबके अन्तःकरणमें दया जन्मि। तब सब महाजन एकट्ठे होके कहने लगे, कि सहायता करनेसे भला होयगा, और सोई करनेको यत्न किया। और उन्हीके बीचमें एक महाजनके

इस व्यापारिके पास एक सहस्र रुपिये पावने थे, यह मनुष्य स्वभावसे निठुर, और उसने यद्यपि इस व्यापारीकी दुर्दशा देखी, और उसके दुःखकी बात सुनी, तथापि दया नहीं करके इस ऋणके कारण उसको बन्दीशालामें बंधवाय दिया। पीछे इस कङ्गाल व्यापारीका बड़ा बेटा, इस प्रकारकी बिपतका समाचार सुनके, बज़त दुःखित ज़वा, और रोता२ इस नगरमें प्रवेश करके, उसी धनीके पावोंमें पड़के, नेत्रके आंसूनसे पाव धोयके कहने लगा, कि हे महाराज, अनुग्रह करके मेरे पिताको बन्धनसे छोड़ दो। जो कोई अटक नहीं होय, तब यह फेर व्यापार करके प्रथम आपकाही ऋणशोध करेगा, इसमें कुछ सन्देह नहीं है। मेरा यौवन और आठ लड़कोंके अवश्य पालन करनेके लिये मेरी माताका दुःख आप देखो, ऐसा और कोई दुःख नहीं है; इसलिये हे महाराज, आप हम सबके ऊपर दया कीजिये। जो आपके अन्तःकरणमें दया नहीं होय, तब हमारे पिताके कारण हमको बन्दीशालामें बांधकर उसको छोड़ दो; कि उनका वह पालन करे। इस बालकके बिलापकी ऐसी बातें सुनके, इस धनीके अन्तःकरणमें दया जन्मी, और आंसू भरे नेत्रोंसे इस युवाको उठाय कर कहने लगा, कि ए बालक, तू मत रो, तेरे पिताको मैं अभी छोड़ देता हूं।

तब वह धनी इस् बालककी सपूताईको और अपनी निठु-राईको देखके लज्जित ऊआ, और तुरन्त उसके पिताको बन्दीशालासे छोड़ दिया।

देखो बुरे लोगके संग रहनेको नहीं चाहता, परन्तु कीर्त्ति और दीनताईको करना, ये दोनो मनुष्यको बऊत् शोभित करते है, क्योंकि उनके द्वारा वह् प्रतिष्ठा और सन्मानको पावता है, यह् बात सर्वत्र प्रसिद्ध है। और प्राचीन लोगों-नेभी कहा है, कि आगे जो सब प्रधान२ कुलमें उत्पन्न होके अपनी खराई और धर्म कार्यके कारण प्रतिष्ठा और आद-रको पावे; और उन्होंनेभी संसारका निन्दित व्यवहार त्यागा था। और प्राचीन लोगोंमेंभी ये व्यवहार त्यागे ऊवे थे, औ जो कुछ भले थे वे उन्होंने ग्रहण किये थे। जहां धर्म-शास्त्रका प्रमाण और पवित्र शास्त्रका भला उपदेश पाया जाय, वहां संसारका निन्दित व्यवहार करना परामर्श नहीं हैं। जब दण्डका भय नहीं है, तब अटक रहते उसी समय में सद्गुणका अनुष्ठान करना, और पवित्र शास्त्रके नियमका पालन करना, और ठीक और धर्म करना, और विपत्के भय विना निष्कारण गालीको तुच्छ जानना, और जो निषिद्ध हैं सो नहीं करना, और ईश्वरकी इच्छा करनेको त्याग नहीं करना, इन्ही सब आचरणोंको करके मनुष्यकी महिमा

प्रभावको पावती है। देखो कुसंगी सबभी इसकी बड़ाई करते हैं; जोभी बातसे ऐसा स्पष्ट कहैं नहीं, तौभी मनमें उनको मानने होयगा।

## भ्रातृ स्नेह।

एक वृद्ध मनुष्यके कयेक पुत्र थे, जो सदाहीं आपस्में झगड़ते रहते। यह देखके वृद्धने उस्की एकताके लिये बहुत यत्न किया, परन्तु वे और किसी प्रकार एक होने नहीं चाहे। और कोई उपाय नहीं पायके, मन२में एक ठौर उपाय ठीक करके, अपने पुत्रोंको बुलायके अनेक सूतसे गुथी और बहुत् सक्त ऐसी एक रस्सी उन्के हाथमें देके कहने लगा, कि तुम सबमें जिस्को जित्नी सामर्थ्य है, कोई भांति कम मत् करो, और हाथसे इस् रस्सीको तोड़ो। उन्सभोंने एक२ करके इस् रस्सीके तोड़नेकी इच्छा किई, परन्तु कोईभी तोड़ने नहीं सका। यह बुड्ढेने देखके, तब इस् रस्सीको उधेड़को एक२ सूत एक२ पुत्रके हाथमें दिया, और उनोंने सहजसे तोड़ डाली। तब वृद्धने कहा, कि ए हमारे बेटो इकट्ठे रहनेमें केत्ता सुख है। देखो जो तुम्हारी आपस्में एक मति होय कौन तुम्हारी हानि करमें सके? परन्तु जब

तुम्हारी आपस्में अन्तःकरणसें मिलाप नहीं रहेगा, तब तुम अलग २ होके शत्रुसे हारोगे।

---

## अहङ्कारकी बात।

अपनी बुद्धि अथवा सुरूप अथवा ऐश्वर्य्य इन्हींके अभिमानसे, अपनेको सबसे बड़ा जानना, और काङ्गाल लोगका अनादर करना, इन् सब मिथ्या अभिमानोंको सब लोक अहङ्कार करके कहते हैं।

बुद्धिका नाश करनेको, और मन मैला करनेको, अहङ्कार के समान और शत्रु नहीं है। जीवकी स्वभावसे यही बात है; कि वह् अपनेको अत्यन्त प्रीति करता है, और उसे अहङ्कार जन्माता है; यद्यपि उस्में कुछ अहङ्कार करनेको नहीं है, परन्तु सब बातोंमें न्यूनता है। जीवनेकी कोई वस्तु सदा नहीं रहेगी; इस् लिये जो कुछ ऐश्वर्य्य हम् सबको है, इस्के विषयमें विचार करना अच्छा है, कि जो इतना छोटा है, उस्का अहङ्कार करना अनुचित है।

मिसर देशका सेसोस्त्रिस् नाम करके एक राजा बड़ा बलवान, जो बड़ा अहङ्कारी था। तिस्का अहङ्कार इहां लों था, कि जब कभी उस्ने जिन्२ राजान्को युद्धमें अधीन किया, उन्को अपने रथमें घोड़ेके समान बांधके रथमें खिंच-

चावता। और एक दिन उन्हीं रथके खेंचनेमें लगायके आप रथके ऊपर चढ़के, फिरते २ देखा, कि उन्हीके बीचमें एक राजा रथके पैय्येको एक टक देखता है। इसका कारण उसने पूछा, इसमें इस पदच्युत राजाने उत्तर दिया, कि हे महाराज, चलनेके समयमे पैय्येके अधोभागको सबके ऊपर देखके, हमारे मनके दुःखका समाधान भया है। सैसोस्त्रिस् राजाने इस सैनको समझके उसी समय अपने कुव्यवहारको त्याग किया।

लिदिया देशका एक राजा क्रीसस् नामा, जो बड़ा ऐश्वर्य्य-वान् था, और किसी दिनमें उसने परमज्ञानी सोलन् नाम करके एक मनुष्यके दर्शन करनेको बड़त् इच्छा किई। यह सोलन सुनके राजाके निकट पज्ञंचा। तब राजाने उसके बड़त् मोलके वस्त्र पहरायके सिंहासनके ऊपर बैठाया; परन्तु सोलनने विचित्र वस्त्र वा गहनेकी ओर दृष्टिभी नहीं दिई। राजाने कहा, कि हे सोलन, तुम्हारी प्रतिष्ठाके विषयमें हमने बड़त् सुना है; तुम अनेक देशन्में फिरे हो, ऐसे विचित्र वस्त्र पहरते कहींभी किसीको देखा है? सोलनने कहा, हे महाराज, इससे अधिक मैंने देखा है; इससे मयूरपुच्छ बड़त अद्भुत है, क्योंकि वह उसका अलङ्कार जो उसका ईश्वरने दिया है, तिसके लिये लोग कुछ पावने होता नहीं।

राजाने इस अनमूल्य उत्तरको सुनके बहुत आश्चर्यसे युक्त भया। तब राजाने अपने सेवकन्को आज्ञा दिई, कि सब धन वा वस्त्रोंके ढेर और नाना प्रकारकी अनुपम सामग्री सोलनको दिखलाओ। पश्चात् सेवकोंने सो किया। राजाने फेर प्रश्न किया, कि कभी किसी मनुष्यको इतना धनी देखा है? सोलनने उत्तर दिया, हां देखा है, आथीन्‌समें टिलास नामे एक मनुष्य, वह जब देश अराजक था? तब वह सुख्याति ऊवा, और अपने समयको प्रतिष्ठासे बिताय करके निदानमें उपयुक्त दो पुत्रोंको अपनी सब सम्पत्ति देके अपने देशके मङ्गलके लिये सब शत्रुन्‌को जीतके रणभूमिमें इयाल होके वह मर गया। और उसके मरणेके स्थानमें उसके स्वदेशीय लोगोंने उसके स्मरण करनेके कारण छत्री बनाई है, और वह आजलों उसको प्रतिष्ठाके कारण रही है।

---

## क्रोध।

शान्त और शिष्टाचारी होनेका प्रथम उपाय यही है, कि अपनेको क्रोधके वशीभूत नहीं करके सदा सावधान पूर्वक रहना। क्रोधको अपने वशमें रखना बहुत भला है। जो मनुष्य क्रोधको पराजय करने सके, वह बड़े बलवान् शत्रुकोभी जीतने सके। जो हम् सब क्रोधको नहीं पराजय कर

सकेंगे, तौ क्रोध हम् सबका पराजय करैगा; इसी लिये देखो क्रोधी लोग परामर्श पावनेको अयोग्य है, और भलाई बुराईका भेद नहीं करसके, और स्वभावसे जितने उत्तम गुण हैं तिन्से विमुख और मित्रताईका नाशक है। और देखो वह् क्रोधके समयमें न्यायको अन्याय और अन्यायको न्याय, औरभी नियमको अनियम और अनियमको नियम करता है।

आगस्टस नाम करके एक मनुष्य जो स्वभावसे क्रोधी था, उसने आथिनोदोरस नामे परम ज्ञानीकी एक चिट्ठी पाई; उस्का अभिप्राय यही, कि प्रथम क्रोधका उठाव मनमें होनेसेही वर्णमालाके सब अक्षर फेर२ उच्चारण करैगा तिस्से क्रोधका निवारण होगा, क्योंकि सहजसे क्रोध वशमें नहीं किया जाता है।

काइसर नाम करके एक मनुष्य उस्ने शत्रुनसे लिखी हुई कएक चिट्ठी पायके, पढे विना जलानेको आज्ञा दिई; और कहा, कि यद्यपि क्रोधके नहीं होनेमें मैं सावधान हूं, तथापि उस्का निमित्त दूर करना उससे अच्छा है।

सीरिया देशका एक राजा, जिस्का नाम आन्टिगोनस्, जब वह तम्बूमें पड़ा था, उसके दो सिपाही उस्के पीछे बैठके उसकी निन्दा करते थे। राजाने अपने कानमें सुनके

कहा, कि हे भले लोगो, तुम थोड़ी दूर जाओ, क्योंकि तुम्हारी बात राजा सुनता है।

एक खेतवालेकी स्त्री एक बेटेको जनके ज्वरसे पीड़िता होके मर गई; पीछे खेतवालेने अपने बालकका पालन किया। एक दिन वस्त्रसे लपेटके पालनेमें इस् बालकको सुवायके, अपने एक कुत्तेको उसी स्थानमें चैाकसाईको रखके, खेतीके काममें गया। फेर आयके उस्ने देखा, कि पालना उलट्के पड़ा है, और सब वस्त्र लोहूसे भर गया है, और इस् कुत्तेकेभी सर्व्वाङ्गमें लोहूके छींटे लगे हैं। खेतवालेने यह् देखके निश्चय किया, कि इसी कुत्तेने मेरे पुत्रको मारा है। तब अत्यन्त क्रोधयुक्त होके बड़े कुठारेसे इस् कुत्तेका सिर काटडाला। तब पालनेको उलट्के निश्चय करके देखा, कि बालकको कुछ दुःख नहीं हुवा, और एक बड़ा सांप उस् स्थानमें मरा पड़ा है, जिस्से कुत्तेने बालककी रक्षा करनेके लिये सांपको मारनेमें अपनेमें लोहू लगाया है; परन्तु खेतवालेने क्रोधसे अन्धा होके अकस्मात् कुत्तेको मारगेरा। इस् लिये जबलग खेतवाला जीया तबलग इस् कुत्तेके कारण दुःखित रहा।

---

## इतिहास।

जिस्२ देशके लोगका जाति व्यवहार और आचरणका

वृत्तान्त जो क्रमागत और परस्पर संलग्न, उसको इतिहास कहते हैं।

और इस् वृत्तान्तको प्राचीन वा नवीन इन् दो प्रकारोंसे विभाग किया जाय। अपने पूर्व पुरुषोंका इतिहास समझ-नेको सब शिष्ट लोगोंकी इच्छा है, इस् इच्छासे पछतावा होता है, कि प्राचीनोंका इतिहास इतना अस्पष्ट और अनि-श्चयमें गुप्त है।

इंगरेजोंके पूर्व पुरुष ब्रीतन लोग, अर्थात् पूर्व कालके साहेब लोगोंने किसी २ समयमें अत्यन्त अज्ञानका व्यवहार किये थे, सो खोलके प्रकाश करनेको बहुत् ज्ञानी लोगोंने चेष्टा किई थी। परन्तु इन् सब चेष्टान्से अन्तमें केवल अटकल भई थी, अर्थात् वे सब कुछभी निश्चय करने नहीं सके। इसी कारण ब्रीतन नाम करके उपद्वीप, अर्थात् साहेब लोगोंका देश, इस् उपद्वीपमें प्रथम किस् समयसे लोग वास करते थे, यह् अबलग निश्चय नहीं है। सेल्ता नाम करके एक उप-द्वीप, जो ब्रीतनके समीपमें है, जिस्के लोग उस्में प्रथम आयके बसे थे। जिस् उपायके द्वारा सब जाति अपने सबके पूर्व मूलसे लगायके अनुसन्धान पूरा करने पावते, सोई उपाय केवल उन्के पूर्व पुरुषोंकी भाषा, और चाल, और व्यवहारका अनुकरण करनेवाले लोगनके निकट रहनेहारे

देशके लोगन्की भाषा, और चाल, और व्यवहारके साथ उपमा किई जाय। और जो सब रचित बातें सत्य इतिहासके लिये लिखी हैं, उन् सबको त्याग करना उचित है। इस् उपद्वीपको रूमी लोगोंने जीत कर् ब्रीतन नाम दिया, इतना कहना बऊत्। कि सब महाजन ब्रीतनमें गये थे, उन्होंने इस् देशके लोगन्को नग्न शरीर और नाना रङ्गसे चित्रित देखा, इसलिये ब्रीतनके लोगोंका नाम ब्रीत दिया। यह् बात अनुमान किई जाय, कि रूमी लोगोंके अधिकारके पहिले इस् उपद्वीपवासि लोगोंको एथिवीके और२ देशके लोग प्रायश नहीं जान्ते थे। इस् उपद्वीपके वासि लोग बऊत२ थे, वे सब घासके घरमें रहते थे, और उन्का भोजन दूध और मांस था। उन्के सिरके बाल ऐसे बडे थे, कि पीठ लग गिरते थे। वे सब मूंछ रखके डाढ़ी मूड़वावते थे। साहेब लोगोंके पूर्व पुरुष ब्रीतन लोग उन्के सब कर्म्म पुरोहितके वचनके अनुसार किये जाते। ड्रुइड लोग अर्थात् पुरोहित ब्राम्हणकी तुल्य एक जाति थे, वे सब मनुष्योंके मध्यमें प्रमान, और सब लोगोंकी पुरोहिताईके काम करनेको ठहराये थे। तिस्से और सब लोगोंके ऊपर तिन् सबकी बड़ी प्रभुताई थी। और उन्के किये शास्त्रोंको बऊत् आदर और उन्की आज्ञाको मानते थे। और वे युद्ध करनेसे रहित थे। वे सब माल और

दिवानी और फौजदारी अदालतका विचार करते, और सबका झगड़ा चुकाय देते; वे सब जो सिद्धान्त करते उसको जो सब नहीं मानते, उन् सबको उसी क्षण जातिसे भ्रष्ट करके अत्यन्त दण्ड देते थे।

पूर्व कालमें ब्रीतन लोगोंने पूजा और पुरोहिताईका इतना दासपना किया था, कि दूसरा लोग उन्के सरीखा नहीं भया। उनकी जाति इन् पुरोहितोंसे करके भ्रष्ट भई, जो उन्के ऊपर अत्यन्त दण्ड किये, और उन् सबको ऐसा समझाते कि तिन्की आत्मा सदा देशान्तरोंमें फिरेगी। और उन्होंने प्रगट किया, कि वे अपनी प्रभुताईको इस् संसारके पीछे परलोकमें भी करेंगे। और अपने धर्मका कार्य्य गुप्त और अन्धेरे स्थानमें उन्होंने किया था। और वे अपनी शिक्षा केवल अपनी जातिके लोगोंको प्रगट करते थे, ऐसा न हो कि सामान्य लोग उस्को समझने पावें; इस्के कारण अपनी जातिके लोगोंको ये सब मत दूसरी जातिको प्रकाश करनेको वारण करते थे, ऐसा विचारके कि सब लोग आंख मूंदके उनको शिक्षाको अधिक मानैं। मनुष्यका बलिदान देना उनके धर्म्म शास्त्रकी रीति थी, और युद्धमें लूटकी वस्तु उन्के देवतान्को अर्पण किई जाती। कुइड लोग जो पुरोहिताईका काम करते थे, उनकी स्त्रीयां जितने मनुष्य युद्धमें बांधे

जाते, उन्की कानोंमें कुरी मारके घावसे जैसी लोहूकी धारा निकलती, तैसी कपट करके होनहार फल पहिलेसे कहतीं। ड्रुइड लोगोंने और लोगोंके और निठुराईसे, अपने को निबाहा और विचारके कि उद्धार अपने हाथमें है, इस् प्रकारसे अपने कालको काटा। वनमें वा गुफामें रहते थे, और उन्का भोजन वनका फल मूल था; इस् भुलावेसे और जातिके पास वे अत्यन्त मान्य और आराध्य थे। इन् पुरोहित लोगोंकी शिक्षाके अनुसार और२ जातिनेभी व्यवहार किया था। इससे सहजमें बूझा जाय, कि उनका व्यवहार भ्रम था। परन्तु निठुर और बऊत् क्रोधी होके उन्का सूर्मापन नहीं घटता था; तथापि सूर्मापन दयाके विना ऐसा नहीं जाना जाता। वे कृपावान् इच्छासे नहीं, परन्तु प्रयोजनसे थे; और वे निर्बलतासे धीरजवान् थे, परन्तु सब अपने प्यारमें अचल थे। इंराजोंके पूर्व पुरुषोंका यही व्यवहार था। वे सब बऊत् कालसे इसी व्यवहारमें रहनेके पीछे, सीसर नाम करके एक रूमी लोग प्रसिद्ध योद्धा था, वह बऊत् देशोंको अपने पराक्रमसे जय करके, इस् ब्रीतन पर चढ़ा। उसने उसके धनमें लोभ नहीं किया, परन्तु केवल अपनी सामर्थ्य जनानेके लिये और अपना यश बढ़ानेके लिये ब्रीतनको जय किया। सीसरने जिस्२ प्रका-

रस इस देशका जय किया, और जिस२ प्रकारसे और२ लोगोंने उसका राज किया, उसका वर्णन विस्तारसे लिखनेमें ग्रन्थ बऊत होय, इसीके कारण इतना कहना बऊत है, कि बीच२में राजकी नागा होके रूमी लोगोंने ईसामसीहोके सम्बतका ४४८ बरस लग उसका राज किया। उसी बरसमें इन रूमी लोगोंने अपने देशके कर्मकी विपत्ति होनेसे ब्रीतन देशके राजको त्याग किया। रूमी लोगोंने प्रायश्च चारसौ वर्ष लग देशमें राज किया था। ब्रीतन लोगोंमें विचारा, कि अपने पक्षमें रहनेसे अपनेको बऊत विपद होगी, और कि दुःखमें गिरनेको वा राजका कार्य करनेको अपने बऊत निर्बल हैं; इसलिये और लोगोंकी चढ़ाईको नहीं रोकने सके थे, इस प्रकारसे और लोगोंकी प्रजा होगये। बऊत लोग ब्रीतन देशका राज करनेके पीछे सात राजमें वह बांटा गया, जिनके सात छोटे राजोंने इन राज्योंका शासन किया। रूमी लोग इस देशसे जानेके पीछे सेकसन जातिने कुछ काल इङ्गलण्डका राज किया था। उनके मतकी बातके विषयमें हम यही जानते हैं, कि उनके वोदेन और थोर नाममें दो मुख्य देवते थे। उन्होंने विचारा कि वोदन युद्धका देवता है, इस लिये वोदेनको वे और देवतोंसे अधिक मानते थे, क्योंकि उसको सब पूजनेहारे

सूरबीर थे, और उसने धर्म्म आत्मीक पूजाको तुच्छ जाना था। उन्होंने माना कि वोदेन ऐसा बलवान् दूसरा नहीं ऊवा; और उन्होंने निश्चय विश्वास किया, कि हम् परलोक में इस् वोदेनसे त्राण पावंगे। उनके धर्म्मके विषयमें इतना हम् जानते हैं; इससे व्यक्त यही है, कि वे पौत्तलिक थे। और तिस् परभी वे चन्द्र सूर्य्यको पूजा करते थे, और झाड़-ने फूंकनेमें और टोनेमें उन्होंने दृढ़ विश्वास किया था। अब वह सब काम और उनका व्यवहार हिन्दु लोग साहेब लोगके बीचमें देखने नहीं पावते हैं। इसको बतलावनेके कारण अब इङ्गलण्डमें जो धर्म्म चलाता है, और वे धर्म्मके पहिले फेरावका संक्षेपसे वृत्तान्तको कहना अवश्य है। इंराजी सम्वत्के ५९० वरस्में इथेलबेर्तके राजमें, जो धर्म्म अब साहेब लोगोंके बीचमें चलित है, उसके प्रगट करनेहारोंने ब्रीतनमें आयके उसको प्रगट किया। पहिले इस् धर्म्मको उन्होंने राजाको समझाय दिया। उसने उसको सुनके उत्तर दिया, जो अबलग लिखा रहा है, राजाने कहा "कि तुम्हारी बात बऊत् ठीक है, परन्तु इस् मतके ग्रहण करनेको हम् सब अपने अगले पुरखोंका धर्म्म किस् प्रकारसे त्याग करने सकें? सो जो होय; तुम् जो आये हो निर्भयसे रहो। जैसें तुम्हारे विचारकी रीतिसे हम् सबको अनन्त सुखका

लाभ होनेके कारण तुम् इतनी दूर पर्य्यटन् करके आयेहो, इस् लिये तुम्हारा अर्थ अवश्य तुम्को मैं देऊंगा, और हमारी सब प्रजाके पास तुम्हारे मत्को प्रगट करने देऊंगा"। राजा-ने जो ऐसी आज्ञा दिई तिसका यही कारण, कि जो इस् धर्म्मके प्रगट करनेहारे बहुत् भले थे, और सबके धर्म्मपथा-वलम्बियोंके स्वभावसे उन्का स्वभाव बहुत भला था। क्योंकि वे सब सत्यपथावलम्बी, और दाता, और दयालु, और शुद्धात्मा थे, परन्तु इस् समय बहुत् इस् धर्म्म पथावलम्बी केवल नाम मात्र। तथापि दो एक मनुष्य उन्के समान ठिकाने२ में हैं।

समयके वशसे कोएक लोग इस् धर्म्ममें आये, और निदान राजाने आप इस् मत्को ग्रहण किया, और उस्का प्रमाण बड़ा हुवा, परन्तु उस्ने कभी किसीपर जोर नहीं किया, क्योंकि जोर और उत्पात प्रगट करना निन्दित है, और सोभी मिथ्या धर्म्मका लक्षण है। पहिले एक दिन ये धर्म्म पथके दिखानेहारे राजाके राजमें आयके सबको यही समझाने लगे, कि प्रभु ईसा मसीहकी सेवा लोगोंकी इच्छाके अनुसार है, और उस्का धर्मात्मा करके प्रकाश करना उचित नहीं है, क्योंकि उस्का सब लोगोंपर प्रेम और मङ्गल है। यही धर्म यहूदी लोगोंके बीचमें पहिले प्रगट भया, और उद्धार

करनेहारेके अवतारकी बरत, प्रथमसे उनके पास प्रगट थो; जिसके कारण कहा जाय, कि इसका मूल यहूदी लोगनसे है।

दूसरे धर्म्मपथावलम्बी साहेब लोगोंके धर्मका संक्षेप वृत्तान्त यहो। वे एक ईश्वरकी पूजा करनेहारे हैं; ईश्वरत्वमें तीन अंग हैं, जिनको पिता, पुत्र, धर्म्मात्मा, कहते हैं, और ये तीनों एक ईश्वर हैं, इनका ऐश्वर्य्य और पराक्रम और सम्पूर्णता समान है। और सब मनुष्य ईश्वरकी आज्ञाको भङ्ग करके पापी होके और नरककी पीड़ाके अधिकारी होके अपनी सामर्थसे अपनेको उद्धार नहीं कर सके। तिस्के लिये पहिलेही ईश्वरने प्रगट किया है, "कि वह् जिस्के द्वारा मनुष्य त्राण पावेंगे, उचित समयमें अवतार लेगा, और कि वह् मनुष्योंके पापके द्वारा दुःखका भोग करेगा, और कि वह् मनुष्योंके पापका बोझ अपनेपर धारण करेगा, और अपनेके बलिदान देगा, और कि अपने लोहूसे पापका प्रायश्चित्त करके मर जायगा, और तीन दिन पीछे सजीव होके उठैगा"। और त्राणके मङ्गल समाचारकी बात जो यहूदी लोगोंके बीचमें प्रगट हुई थी, सो हम् लोगोंनेभी पाई।

## इस् देशमें साहेब लोगका आगमन।

ईसा मसीहके संवत्का १६०० बरसमें साहेब लोगने

इस् देशमें आवनेके लिये जो व्यवहार किया था, वह मैं थोड़ेमें समझाऊंगा। १४९० बरस्में इस् देशमें आवनेको एक नया मार्ग पाया गया। जब पृथिवीका आकार और खगोलकी गति भली प्रकारसे जानी नहीं गई, तिस् कालमें जहाज समुद्रके बीचसे चलने नहीं सक्ते किनारे २ जाते। तिस् करके जलके मार्ग जाना आवना करना बहुत् भयानक और दुर्गम था। जब पृथिवीका आकार और खगोलकी गति और कोम्पास भली प्रकारसे जाने गये, तब जलमार्ग सहज् होने लगा; और तिस् कर्के साहिब लोगोंको वा और २ लोगोंको बहुत् लाभ दीखने लगा। देखो जलमार्गसे जाने आवनेकी सुधराईसे और बनिजके बढ़नेसे सब लोग बहुत् कमाई करने लगे। पहिले कोई ऐसा उपाय नहीं था, कि जिस् कर्के सहजसे विद्या और ज्ञान सर्वत्र प्रगट होय; क्योंकि पुस्तके विद्या प्रगट करनेका मुख्य उपाय है, परन्तु हाथके लिखनेमें जितनी अवश्य उतनी नहीं होने सक्ते, इस् लिये ऐसा उस्का उपाय भया है, कि बहुत् सहजसे अनेक २ पुस्तके त्यार होने लगीं, उस्का नाम छापा विद्या है। और पृथ्वीका एक नया खण्ड, जिस्को अब आमेरिका कहते हैं, इस् समयमें प्रथम प्रगट भया। परन्तु तिस्के पहिले इस् देशको परदेशी लोग नहीं जानते थे, इस् लिये

देखो केवल विद्या करके और २ देशके लोगोंके साथ वनिज और व्यवहार बढ़ा। तिस् उपरान्त विद्या और ज्ञानकी चर्चा सर्वत्र होने लगी।

ईसा मसीहके सम्बत्के १६०० बरस्में बङ्गालेके लोगोंके साथ वनिज करनेको सनद इङ्गलण्डके राजाने कोम्पानीको पहिले दिई। पीछे जो सब अपनी सम्पत् बनिज करनेको साधारण एक पूंजी एकट्ठी किये, उन्हीको कोम्पानी कहा जाय। तब इस् कोम्पानीको पूंजी कमती बढ़ती केवल पांच लक्ष रुपये थे। पीछे यह् कोम्पानी वनिज करनेके लिये चार जहाज अनेक प्रकारकी सामग्रीसे भरके इसी देशमें आयके व्यापार करनेसे लाभ भया। फेर फिरके जानेके समय इन् जहाजों करके इन् देशसे जो२ क्रय सामग्री अपने देशमें ले गये, तिस्में भी थोड़ा बहुत् लाभ हुवा; ऐसा लाभ देखके यह् वनिज सदा करनेको उन्को भरोसा हुवा। फेर वे एक सनद पाये और अपने व्यापारके लाभसेभी एक कोटि बीस लाख रुपये बढे।

ओलन्देज, और फिरिङ्गी, और इंगरेज लोग, अपने२ वनिज करनेका स्थान बङ्गालेमें पावनेके पहिले समुद्रके तीर-में मालावार और करमेण्डल नाम करके वास करनेके लिये दो स्थान पाये थे। तिस् समयमें एक साहेब बहुत् बड़ा वैद्य

था, जो सूरतमें वास करता था। इंगरेज उसीसे बङ्गालेका बनिज करने पाये; ऐसा ऊवा कि ईसा मसीहके सम्वत्के १६३६ वर्षमें आगरेमें शाह जहां बादशाहकी बेटीको एक बड़ी पीड़ा ऊई थी; यह समाचार साहेब लोक पायके इस् डाक्तर साहेबको सूरत्से आगरे भेज दीये, उसने अपनी सुचिकित्सासे इस् बादशाहकी बेटीको रोगसे भला किया। तिस्में बादशाहने बऊत् सन्तुष्ट होके इस् डाक्तर साहेबको बऊतसा धन देके अपने राजके भीतर कर बिना बनिज सर्व्वत्र करनेको सनदभी दिई। वह उस् सनदको पायके बङ्गालेमें आया, और सामग्री अथमोल लिई, सूरत्को भेजनेके कारण जहां उस् कालमें इंरेजोंकी एक कोठी थी।

इसके उपरान्त बङ्गालेके नवाबकी एक प्यारी स्त्रीको पीड़ा ऊई, उस्का समाचारभी डाक्तर साहेब पायके फेर फिरके शीघ्र उसको रोगसे छुटाया। वह नवाबसाहेबने देखके बऊत् सन्तुष्ट होके उसको अनेक धन देके अपने पास चिकित्साईके करनेके कामपर रखा। और सनद जो डाक्तर साहेबके पास बादशाहकी दिई थी, उसको उसनेभी दृढ़ किया; और जो नवाब ऐसा नहीं करते, तब कुछ फल उससे नहीं होता। इस् नवाब साहेबने और इंरेज लोगोंको बङ्गालेमें इस् प्रकारसे आवनेको और बनिज करनेको आज्ञा दिई।

उस कालमें जो सूरतमें बड़ा साहेब था, उसको इस डाक्तर साहेबने अपनी सुख्यातिका समाचार लिखा। अनन्तर इस बड़े साहेबके परामर्शसे ईसा मसीहके सम्वत्के १६४० वरसमें कोम्पानीने इंरेजकी विलायतसे दो जहाज बङ्गालेमें भेजे। जो तिस्में मुखिये थे, उन्को इस डाक्तर साहेबने नवाबके पास लेजायके मिलाया; पीछे नवाब साहेबने उनका शिष्टाचारसे सत्कार किया, और उनके वनिजके काममें सहाय किया। उपरान्त इस वनिजमें जो लाभ भया है, तिससे कोम्पानीको सदा वनिज करनेका साहस ऊवा। अनन्तर अनेक जहाज पऊंचनेसे जहाज बोझाई करनेको सामग्री इकट्ठी होके एक स्थानमें रहे ऐसी इच्छा थी, इस लिये कोठी बनानेको अवश्य प्रयोजन भया। इस लिये कोम्पानीने ऊगलीमें एक कोठी बनाई।

इस देशमें इस कोम्पानीका प्रथम रहना, और प्रभुत्व, और देशाधिपति होनेका पूरा वृत्तान्त सुननेसे हिन्दु लोगोंको बऊत् सुख होयगा। इस लिये हमको बूझ पड़ता है, कि हिन्दु लोगोंकी सर्व्वथा प्रवृत्ति और इच्छा होती है; और हिन्दु लोगोंके भीतर जो लोग बड़े पण्डित हैं, वे यह कोम्पानी कैसें इस देशका राजा ऊवा, इसके विवरणका ग्रन्थ रचनेको प्रवृत्त होंगे। क्योंकि छापा विद्यासे थोड़े मोलसे

बऊत् विद्या प्रगट होय। यह पूर्वोक्त वृत्तान्त सब लिखनेसें ग्रन्थ होय बऊत्, इसके निमित्त इहां लों बस है।

देखो यह् कोम्पानी इस् देशका राजा होके प्रजाका सुख और सम्पद होनेकी चेष्टा करने लगा, और प्रजा लोगको सुखसे रखनेके लिये ऐसा व्याकुल ऊवा, कि पृथिवीके मध्यमें कभी कोई पृथ्वीपति प्रजा लोगको सुखमें रखनेके लिये ऐसा व्याकुल नहीं ऊवा। तिस्लिये कोम्पानीको इस् प्रकार सच्चरित्रको सबके सुखका बड़ा कारण जानना सबको उचित है।

## इङ्गलण्डके राज्यका शासन।

राजा और दो सभासे इङ्गलण्डका शासन होता है। जो राजा मरजाय तब उस्का बड़ा बेटा राज्य पर बैठे, परन्तु वहभी सभाओंके सिद्धान्तके अधीन है। राजा व्यवस्थाके अनुसार युद्ध वा सन्धि करने सके, और राज काजमें लोगको रखने सके। परन्तु विना व्यवस्थाके कोई कर्म्म करने नहीं सके, और यह् व्यवस्थाभी सभासदोंकी सम्मति विना नहीं चलने सके, और प्रजाका करभी लेने नहीं सके।

और वे सदा राजा और दो सभाओंके ठहरावके विना कोई व्यवस्था चलने और वारण नहीं होने सके। उन् दोनो सभान्का वृत्तान्त यही; प्रथम सभा कुलीनोंकी, और द्वितीय

लोगनकी। कुलीनोंकी सभामें कुलीन वंशमें उत्पन्न लोग ज्येष्ठानुक्रमसे बैठें, और चौबीस जन धर्म्माध्यक्ष और दो जन प्रधान धर्माध्यक्ष तिनके मध्यमें बैठें। द्वितीय लोगोंकी सभामें तीन देशके लोगने चुने ऊवे छःसौ लोग मनके उपयुक्त उसी सभामें बैठें। उन्होंका मुख्य कर्म्म यही है, कि वर्ष२ करका निर्णय करना, और सुचेताईसे व्यवस्था करना, जिसलिये उनकी सम्मति विना राजा अपना कर लेने नहीं सके। जो राजाके मन्त्री व्यवस्थासे विपरीत कोई कर्म्म करैं, और उनसे लोगोंको दुःख होय, तब उनके नाम पर इसी सभामें नालिश होय।

## इङ्गलण्डका राजकर।

इस लिये देख देशका राजकर पृथिवी और अन्य सब उत्पन्न होय। प्रति वर्ष सभाओंकी आज्ञासे चालीस कोटि रुपया राजकर ग्रहण किया जाय।

## इङ्गलण्डकी सेना।

इस समय युद्ध नहीं है, इस लिये सेना घटाई गयी है; परन्तु अबभी प्रायस् डेढ़ लाख सेना तैयार है। सो सब सेनामें केवल इङ्गलण्डके लोग है।

## इङ्गलण्डका जहाज।

इंरेज लोगोंका पराक्रम केवल सेनासे नहीं है, क्योंकि उनका मुख्य बल अपने जहाजोंसे है; जिनके द्वारा साहेब लोगोंने समुद्रादिका राज प्रायस् सब हाथमें किया है। यही पराक्रम देखके और सुनके बऊत देशके लोगोंको भय होता है। इंगलण्डके जहाज और२ देशके जहाजोंसे बड़े नहीं हैं; परन्तु छोटे बड़े प्रायस् हजार है। और कदाचित युद्ध होय, इस्लिये वे सदा तैयार रहते हैं; और तिनमें प्रायस् एक लाख बीस हजार जहाजी भरे रहते हैं।

## इङ्गलण्डके खण्ड और प्रधान नगर आदि।

इङ्गलण्ड देश चालीस खण्डमें भाग किया गया है, वेलसके प्रधान भाग बारह हैं, परन्तु भागके सरीखे नगर नहीं। इङ्गलण्डका प्रधान नगर लाण्डन, स्काटलण्डका प्रधान नगर एडिनबरो, और ऐर्लण्डका प्रधान नगर दबलिन्। अनुमान होय कि लाण्डन नगरमें दश लक्ष मनुष्य है, परन्तु और किसी नगरमें एक लक्षके ऊपर बऊत् नहीं हैं। लाण्डन नगर लम्बाइमें छः कोस और चोड़ाईमें तीन कोस; तिसमें आठ हजार गली हैं, और दो सौ गिरिजा घर है। और तिसके बीचमें तेमस् नाम करके एक बड़ी नदी बहती है,

तिसके ऊपर कः पुल बंधे हैं। लाण्डनके परे योर्क नाम करके जो प्रधान नगर वह प्रशंसाके योग्य है, पूर्व कालमें इङ्गल-ण्डके उत्तर भागमें प्रधान नगर वही था। इङ्गलण्डके पश्चिम भागमें ब्रिस्तल नाम करके प्रधान नगर है, उसी भागमें लिवरपुल नाम करके एक नगर है, वह ब्रिस्तलसे कुछ छोटा है। इङ्गलण्ड देशके मध्यमें बाथ नामे एक अतिसुन्दर नगर है, और रोग सान्ति दायक सामर्थ्यसे जलकी बड़ी डाई है। पीछले मांचेष्टर नाम करके उस् स्थानमें एक छोटा गांव था; परन्तु रूईके व्यापारसे एक सौ बर्षके भीतर बड़ा नगर ऊवा है। पहिले बर्मिङ्गहाम भी छोटा एक गांव था; परन्तु कर्म्मकारोंके व्यापारसें बड़ा नगर ऊवा है; अब वहां साट हजार मनुष्य उसी काममें नियुक्त हैं। उत्तम २ धार-वाले शस्त्रादिके व्यापारसे शेफिल्ड नगर बऊत बड़ा है; वहांभी पैंतालीस हजार मनुष्य उसी काममें नियुक्त हे। इङ्ग-लण्डमें और बऊतसे नगर हैं, परन्तु इनसे वे छोटे हैं; जैसा कि पोर्त्सपौथ्, प्लिमौथ्, फालमौथ, हल, इत्यादि।

---

## इङ्गलण्डकी पाठशाला।

इङ्गलण्डके भाग्यवान् लोगोंके सन्तानोंकी विद्याके लिये अनेक पाठशाला हैं, तिनोंमें दो बऊत प्रधान हैं, अक्सफोर्ड

नाम करके जो स्थान तिसमें सत्तरह पाठशाला हैं, और केम्ब्रिजमें सोलह पाठशाला है, उन् स्थानोंमें अनेक भाषा और विद्याकी शिक्षा पाई जाती हैं। और दरिद्री लोगोंकी सन्तानोंको विद्या देनेके कारण अब आठ हजार पाठशाला बनी है, जिन्होंमें अनेक२ निर्धन लोगोंकी सन्तानें विना मोलमें पुस्तकादि पायके सुशिक्षा पावते हैं।

## विश्रामका दिन, अर्थात् रविवार।

इङ्गलण्डमें अठवारेका प्रथम दिन केवल ईश्वरकी सेवा करनेको ठहराया है। उस् दिनमें कोई किसानका कर्म आदि कुछ व्यवहार नहीं करे, महाजन लोगभी हिसाब आदि कुछ नहीं करें, और उस् दिन सब विचारके स्थान बन्द होय। इसी प्रकारसे एक दिन विश्राम करके सब लोग फेर कार्यके आरम्भमें बहुत् उद्योगी होय, और उसी दिन धर्म-शास्त्रके पढ़ने सुननेके द्वारा ईश्वरके प्रति और अपने२ पड़ो-सियोंके प्रति जो२ करनेको सोभी जानने पावते हैं।

## बारह जनोंके द्वारा मुकद्दमा।

जब कोई लोग दोषी होनेसे विचारके स्थानमें लाया जाय, तब तिसके बारह पड़ोसीयोंको प्राड्विवाक बुलायके

उन्होंको प्रश्न करके साक्षीके मुखसे जानके उन्हीं बारह जनो-को पूछे, कि यह मनुष्य दोषी है अथवा नहीं? पश्चात् उन्होंकी बातके अनुसार जिस्को प्राड्विवाक उलटा नहीं करने सके जो होय कि लोग सापराधी अथवा निरपराधी ऐसा एक निश्चय होय। जो यह् दोषी मनुष्य इन् बारह जनोंके मध्यमें किसी मनुष्यकेभी सम्मत न होय, तब और कोई उस् स्थानमें नियुक्त होय। इसी प्रकारके विचारका फल यह है, कि घूस देके मुकद्दमा नहीं होने सके, और प्रत्येक मनुष्यके बीचमें जिस्को जैसी धन सम्पत्ति है वह् उसीको स्थिर है, उसको राजा वा और कोई नहीं लेने सके।

---